KRISHNA AGRIBUSINESS DEVELOPMENT

हमारा अनुसंधान

किसान भाइयों को कृषी में आनेवाली समस्याओं से मुक्ति दिलाने में सक्षम मल्टीप्लायर खाद की ताकत कार्य एवं उपयोगिता .

मिट्टी की ताकत

किसान भाइयों , हम जिस मिट्टी में खेती कर रहे हैं, ये बहुत ही खास है ,प्रकृति ने इस मिट्टी को इतना अदभुत बनाया है कि इसके अंदर जब बीज जाता है तो वह अंकुरता है ,उसमें २ पत्ते उगते हैं और धीरे -धीरे वो बढ़ता है | विशाल वृक्ष बनता है | उसमें फल और फूल लगते हैं | इस सारी प्रक्रिया की ताकत प्रकृति ने इस मिट्टी में दी है |

प्रकृति की कार्यप्रणाली

हमें आज लगने लगा है कि रासायनिक खाद डाले बिना खेती नहीं हो सकती परंतु प्रकृति की व्यवस्था बिलकुल इस तरह की बनाई गई है कि इसके अंदर यह प्रक्रिया अपने आप होती है | हम जानते हैं यदि गर्मी ज्यादा हो तो बरसात अच्छी होगी, अगर बरसात ज़्यादा आएगी तो ठंड ज्यादा होगी | कहीं अगर वृक्ष ज्यादा हैं, तो उन प्रदेशों में बरसात ज़्यादा होती है, या जिस भाग में ज़्यादा वृक्ष हैं, उस भाग में ज़्यादा वर्षा होती है | यह कुदरत की प्रणाली भी एक दूसरे पर आधारित है | एक चक्र के रूप में इसका कार्य चलता है, तात्पर्य यह कि हमारी मिट्टी में सभी प्रकार के पौधों को बड़ा करने की,फल-फूल देने की व्यवस्था प्रकृति ने बनाई है और इस प्रणाली को अगर हम समझते हैं तो हमें खेती करना काफी आसान हो जायेगा |

बगैर रासायनिक खाद के जंगल में वनसंपदा का विकास

किसान भाइयों,आप किसी जंगल में जाइए वहाँ हमें बड़े-बड़े विशाल वृक्ष देखने को मिलते हैं , छोटे-छोटे पौधे देखने को मिलते हैं , फल के पेड़ों में जो फल लगे हुए हैं, उन पर कोई व्यक्ति किसी रासायनिक दवाईयों का छिड़काव करने नहीं गया था परंतु उस फल के पेड़ में लगे बड़े-बड़े फल हमें कीड़ और रोग से मुक्त नज़र आते हैं | ऐसे फलों को हम तोड़कर खा सकते हैं, और वहाँ के स्थानिक लोग उन फलों को तोड़कर बाजार में बेचने भी आते हैं | किसान भाइयों , क्या उस जंगल में कोई 'एन पी के ' डालने गया था ? ना आप गए थे ना सरकार ,यह मुमकिन भी नहीं है | जब बिना 'एन पी के ' के वहाँ फसल उगती है तो हमारी खेती में 'एन पी के ' डालना क्यों आवश्यक है ? इस बात को आप अच्छे से समझ लेते हैं तो खेती करना हमारे लिए काफी आसान हो जायेगा |

मिट्टी की सजीवता

किसान भाइयों , हमारी मिट्टी सजीव है इस दुनिया के अंदर जो भी कुछ है, वह एक दूसरे पर आधारित है | हम कहते हैं, "**जीव जीवात जायते, जीवे जीवष्य जीवनम्**" अर्थात एक जीवन पर दूसरा जीवन आधारित है | हमारी इस मिट्टी के सजीव होने को पूर्वजों ने अच्छी तरह पहचाना था, हमारे पूर्वज इसे धरती माँ कहते थे , हम भी धरती माँ कहते हैं | हमने जितने भी नाते जोड़ें हैं, वो निर्जीव के साथ नहीं हैं , सभी सजीव के साथ हैं | एक तालाब में पानी भरा है पर उसमें हलचल नहीं है तो उससे हम नाता नहीं जोड़ते, परंतु नदी जिसमें पानी बहता है उसे हम गंगा माँ ,

माँ नर्मदे कहते हैं , हमने उसके साथ एक नाता जोड़ा है | उसी तरह से हमारे पूर्वजों ने मिट्टी की ताकत को पहचाना था , इस मिट्टी की सिस्टम और सजीवता को पहचाना था और माँ कहा था तो किसान भाइयों ये मिट्टी सजीव है, और सजीव के साथ हमने जो व्यवहार किया है, उसकी वजह से ही हमें आज कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है |

प्रकृती द्वारा उपलब्ध खाद तथा सूक्ष्म जीवाणू

हमारी मिट्टी में प्रकृति ने एक सिस्टम बनाई है जो स्वयंचलित है इसमें एक के बाद एक एक्टिविटी होती रहती है, इस मिट्टी में फसल बढ़े, पौधे बढ़ें, उसमें फल-फूल लगें और वृक्ष का रूप धारण करें ऐसी व्यवस्था प्रकृति ने बनाई है | प्रकृती ने एक ग्राम मिट्टी में लगभग १० करोड़ या इससे ज्यादा जीवाणू रह सकें ऐसी व्यवस्था बनाई है | इन जीवाणुओं पर कोई जिम्मेदारी नहीं है कि पौधे को बढ़ाना है, वृक्ष को बड़ा करना है, परंतु जो सिस्टम बनाई है उसमें इन जीवाणुओं के द्वारा ही पौधे को खाद मिलता है, यह सिस्टम ऐसा है कि जीवाणु अपना जीवन यापन मिट्टी में उपलब्ध खनिजों को खा कर करते हैं | खनिज, पौधों का खाद है, जो हमारी फसलों को आवश्यक है, वह खनिज फसल डायरेक्ट नहीं खा सकती है , इसीलिए जीवाणू उस खाद को खाते हैं और खाने के बाद उनमें जो उर्जा निर्माण होती है, उस उर्जा का उपयोग वो पेशी विभाजन से अपनी संख्या बढ़ाने के लिये करते हैं |

फसलें अपना भोजन स्वयं बनाने में सक्षम हैं |

फसलों को जितना भोजन लगता है,उसका ९६.२ प्रतिशत फसल हवा और पानी से प्राप्त करती है, इसमे कर्ब ४१.२ प्रतिशत ,कर्बम्लवायु पानी और ऑक्सीजन ४६.३ प्रतिशत ,हाइड्रोजन ५.४ प्रतिशत तथा नत्र ३.३ प्रतिशत , इस तरह फसल को जितने भी भोज्य पदार्थ की आवश्यकता होती है उसमें से सिर्फ ३.८ प्रतिशत भोजन की पूर्तता मिट्टी से होती है, इसके अलावा लगने वाले भोज्य पदार्थ सभी प्रकार की फसलें तथा पौधे ज़मीन से लेते हैं, जिनका प्रतिशत ३.८ है | इन भोज्य पदार्थों का नाम हैं कैल्शियम, पालाश, मैग्नेशियम, स्फुरद, गंधक, क्लोरीन, बोरॉन, मैग्निज़, जस्त, तांबे, मालीब्लेडनम, कोबाल्ट, निकेल, सिलिका, और सोडियम | किसी भी फसल या पौधे के लिए सबसे ज़्यादा आवश्यकता नत्र खाद की बताई जाती है, तथा नत्र खाद ही हमारी मिट्टी को ज़्यादा ख़राब करता है| प्रकृति ने फसलों तथा पौधों के लिए उनकी आवश्यकता से ज़्यादा नत्र खाद के उपलब्धीकरण की व्यवस्था बनाई है| प्रकृति के द्वारा १ एकर क्षेत्र में उपलब्ध होनेवाले नत्र खाद की मात्रा तथा आवश्यकता पूर्ती करानेवाले अनेक जीवाणु हमारी मिट्टी में कार्यरत रहकर हमारी नत्र आवश्यकता की पूर्ती कराने में सक्षम हैं| आज की खेती व्यवस्था में ,प्रकृति की सिस्टम में हमारे द्वारा निर्माण की गई खराबी की वजह से हमें नत्र बाहर से डालना पड़ रहा है|

नत्र खाद की पूर्तता करानेवाले जीवाणु

१) बरसात में बिजली चमकने से तथा आंधी तूफ़ान के साथ बरसात होने से ४५ किलो |

२) फसल की जड़ें , काड़ी-कचरा तथा पत्ते सड़ने से प्राप्त ऊर्जा का इस्तेमाल करनेवाले सूक्ष्म जीवाणु द्वारा प्राप्त नत्र की मात्रा - ७० किलो |

३) सूक्ष्म जीवाणु मरने से प्राप्त नत्र की मात्रा - ८० किलो |

४) असेटोबेक्टर जीवाणु मरने से प्राप्त नत्र की मात्रा - ७५ किलो |

५) अज़ोटोबॅक्टर जीवाणु द्वारा मिलनेवाली नत्र की मात्रा - २६ किलो |

६) अझोस्पिरिलम जीवाणु द्वारा जीवाणु द्वारा मिलनेवाली नत्र की मात्रा - ४५ किलो |

७) फ़्रन्किया जीवाणु द्वारा जीवाणु द्वारा मिलनेवाली नत्र की मात्रा - २२ किलो |

८) क्लॉस्ट्रीडियम पास्चरेनियम जीवाणु द्वारा मिलनेवाली नत्र मात्रा - २० किलो |

९) बायजेरिन्किया जीवाणु द्वारा मिलनेवाली नत्र मात्रा - ३५ किलो |

१०) अक्रोमोबेक्टर, ऐरोबैक्टर, रेडिओबैक्टर और सुडोमोनास जीवाणु द्वारा मिलनेवाली नत्र मात्रा - १२ किलो |

११) नत्र उपलब्ध करानेवाले जीवाणुओं द्वारा मिलनेवाला नत्र - २५ किलो |

इस तरह प्रकृति के द्वारा एक एकर क्षेत्र में ४५५ किलो तक नत्र मिल सके ऐसी व्यवस्था बनाई गई है | ज्यादा से ज्यादा नत्र लगनेवाली किसी भी फसल या फल पौधों को इसका ५० प्रतिशत भी नत्र नहीं लगता | मतलब प्रकृति ने हमारी आवश्यकता से दुगुने से भी ज्यादा नत्र हमारी फसलों को मिल सके ऐसी व्यवस्था बनाई है |

आर्गेनिक खेती की सक्षमता

फसल तथा पौधों को स्फुरद उपलब्ध कराने का काम बहुत सारे जीवाणु तथा मायकोराजा नाम की फफूंद (बुरशी) के द्वारा होता है | पोटाश उपलब्ध कराने का काम बसिलस सिलिकस जीवाणु द्वारा होता है | गंधक की उपलब्धता थायोबासिलस, थायोऑक्सिडन्स, थायोपरस, नोव्हायलस, माइक्रोबेक्टर, सुडोमोनास, फेरोबासिलस, फेरोऑक्सिडन्स, इत्यादि जीवाणु तथा माइक्रोस्पोरियम, असपरजिलस, पेनिसिलियम, मायक्रोथेसियम इत्यादि फफुंद (बुरशी) के द्वारा होता है | कैल्शियम की उपलब्धता केंचुए (गांडूळ, अलसिया) के खाद से होती है | केंचुआ चूने का पत्थर खाकर कैल्शियम तैयार करता है| मैग्नेशियम एक आवश्यक घटक है | फसल तैयार होते-होते मैग्नेशियम जड़ों में पहुँच जाता है | अगर आप जड़ों को खेत से निकालकर बाहर नहीं फेंकते तो समझ लीजिये कि आपको , आपकी फसल के लिए , मैग्नेशियम कि व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है | पहले ही फसल की जड़ों में उपलब्ध मैग्नेशियम फसल को मिल जाता है | साथ-साथ मिट्टी में उपलब्ध खनिज मायका तथा डोलोमाइट में से जीवाणुओं के द्वारा फसल को मिलता है | लोहा इस घटक की पूर्तता फायटोसायडरोफोअर्स जीवाणु के द्वारा होती है | हमारी मिट्टी में फेरिक लोहा होता है| जिसे फायटोसायडरोफोअर्स जीवाणु फेरस में बदल देते हैं जो तुरंत फसल को मिल जाता है | उपरोक्त मुख्य तथा सूक्ष्म अन्नद्रव्य के अलावा एक एकर क्षेत्र के लिए बोरॉन ५० ग्राम, तांबा ४५ ग्राम, जस्त ११० ग्राम, मैग्नीज ३०० ग्राम, मालीब्लेडनम १० ग्राम , क्लोरीन ४ किलो, निकेल २०० ग्राम की आवश्यकता होती है | यह आवश्यकता आर्गेनिक खेती में आसानी से पूरी हो जाती है | मल्टीप्लायर खाद आपकी फसल को उपरोक्त सभी खाद आसानी से उपलब्ध हो सके ऐसी व्यवस्था बनाता है |

मिट्टी के PH में सुधार

हमारी मिट्टी में उपलब्ध खाद के ३ स्टेज का संबंध हमारी मिट्टी के अंदर आई हुई खराबी से है | अगर मिट्टी स्वस्थ

है, उसका 'पीएच' सही है, तो हमारे पास उपलब्ध जीवाणुओं को वो खाद उपलब्ध होती है और अगर मिट्टी का 'पीएच' सही नहीं है, वो खराब हो गई है तो उस खाद का उपलब्धीकरण हमारे सूक्ष्म जीवाणुओं के द्वारा नहीं होता | **कंपनी का 'मल्टीप्लायर' खाद हमारी मिट्टी के 'पीएच' को मेंटेन करता है | मिट्टी के 'पीएच' में सुधार होते ही मिट्टी उपजाऊ बन जाती है | सरलता से मिट्टी का 'पीएच' मेंटेन हो सके ऐसा अनुसंधान करनेवाली आपकी कंपनी कृष्णा अग्रीबिज़नेस डेव्हलपमेंट प्रा. लि .एकमात्र कंपनी है |**

रासायनिक खाद तथा बंजर मिट्टी

हमने हमारी मिट्टी को रासायनिक खादों की भरमार करते-करते खराब कर दिया है | जंगल में हम देखते हैं कि आज भी सब कुछ व्यवस्थित चल रहा है, उसका कारण यह है कि वहाँ पर ऊपर से किसी रासायनिक खाद का उपयोग नहीं हुआ | हमारी मिट्टी में उत्पादन बढ़ाने के लिए हम जिस रासायनिक खाद का उपयोग कर रहे थे, वह उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ मिट्टी को भी खराब कर रहा था, उसने काफी वर्षो तक उत्पादन भी दिया, अब ये स्थिती हो गई है कि कुछ-कुछ खेतों के अंदर मिट्टी इतनी खराब हो गई है कि हम उसे बंजर मिट्टी के रूप में जानने लगे हैं | वहाँ पर कुछ भी पैदा नहीं होता, ये सारी परिस्थितियाँ मिट्टी में रासायनिक खाद डालने के कारण निर्माण हुई है |

सॉल्टी मटेरियल की भरमार

जब हम मिट्टी में नायट्रोजन (नत्र) संबंधित कोई भी रासायनिक खाद डालते हैं, तो नत्र उसमे ४६% होता है और ५४% ऐसा सॉल्टी मटेरियल होता है, जो मिट्टी को खराब करता है, उसी तरह अगर हम फॉस्फेट संबंधीत कोई खाद डालते हैं तो उसमे फॉस्फेट होता है १६% और सॉल्टी मटेरियल होता है ८४%, जो मिट्टी को खराब करता है, मतलब हम जितना खाद डालते हैं, उससे ज्यादा प्रमाण में मिट्टी को खराब करनेवाले तत्व डाल रहे हैं | इसका परिणाम ये हुआ कि हमारी मिट्टी धीरे-धीरे खराब होती गई | हम देखते हैं कि हमारे खेत में पैदावर कम होती है, परंतु मेड़ पर जो पेड़ लगा है, वह ज्यादा स्वस्थ है, उसकी पैदावर ज़्यादा होती है, कारण यह कि वहाँ किसी ने खाद नहीं डाला| हमने हमारी मिट्टी में रासायनिक खाद डाला है इसीलिए हमारी मिट्टी खराब हुई है | जंगल में खाद नही डाला इसीलिए जंगल की मिट्टी आज भी अच्छी है | हमारी मिट्टी में रासायनिक खाद ने जो खराबी की है उससे उसका 'पीएच ' बिगड़ गया है और उसके कारण हमारी मिट्टी की उपजाऊ क्षमता कम हो गई है |

मल्टीप्लायर और आपका कृषी उत्पादन

प्रकृती द्वारा हमारी मिट्टी में उपलब्ध खाद का द्वितीय और तृतीय स्टेज में रुपांतर हो गया है | पहली स्टेज में खाद का उपलब्धीकरण न होने की वजह से जीवाणू मिट्टी से कोई खाद नहीं ले पाते हैं, हम अलग से जो खाद डालते हैं केवल उसका ही उपलब्धीकरण जीवाणू हमारी फसल को करा के दे रहे हैं | किसान भाइयों, **हमने इन सभी चीजों का विचार करने के बाद ही अनुसंधान (रिसर्च) से 'मल्टीप्लायर' खाद का निर्माण किया है, जो मिट्टी में आई हुई सभी खराबियों को दूर करने के बाद आपकी कृषी उत्पादन क्षमता को ३ गुना तक बढ़ा सके | उत्पादन ३ गुना तक धीरे-धीरे बढ़ेगा** |

KRISHNA AGRIBUSINESS DEVELOPMENT

गोबर की खाद और हमारा कृषी उत्पादन

आपकी खेती में जिनके पास गोबर की खाद उपलब्ध है, वो कभी-कभी गोबर की खाद डालते होंगे तो याद किजिए जिस वर्ष आप गोबर की खाद डालते हैं, उस वर्ष उत्पादन नही बढ़ता, बल्कि उसके दूसरे वर्ष उत्पादन में जोरदार बढ़त नजर आती है | क्यों? क्योंकि गोबर की खाद खेत में डालने के बाद जब सड़ती है तो उसमें से कार्बन रिलीज़ होता है, वो कार्बन हमारे सूक्ष्म जीवाणुओं का खाद्य है, भोजन है, तो कार्बन मिलने के बाद सूक्ष्म जीवाणू ज्यादा संख्या में आपकी मिट्टी में एक्टिव होते हैं,भोजन खाते हैं, अपनी प्रजाती का निर्माण करते है , पुराने जीवाणू मरते हैं और आपकी फसल को मिलते हैं, अतः दूसरे साल उत्पादन जोरदार होता है |

मल्टीप्लायर तथा कार्बन

हमने मल्टीप्लायर खाद का निर्माण करते समय सभी बातों पर विचार किया है | मल्टीप्लायर में कार्बन की मात्रा प्रचंड प्रमाण में उपलब्ध होने के कारण सूक्ष्म जीवाणू बहुत ज्यादा तादाद में अपनी संख्या को बढ़ाएँगे और उतनी ही तादाद में मरने के बाद आपकी फसल को सभी प्रकार के पोषक तत्व मिलेंगे और आपकी फसल अच्छी तरह बढ़ेगी | इस खाद को डालने के बाद सबसे पहले फायदा आपने देखा की सूक्ष्म जीवाणू कि संख्या बढ़ रही है दूसरा इसमें ये होगा की रासायनिक खादों के इस्तेमाल से मिट्टी में आई खराबी के नुकसान में सुधार आएगा इस वजह से मिट्टी का जो 'पीएच' बिगड़ गया है वह धीरे-धीरे मेंटेन होने लगेगा और 'पीएच' के मेंटेन होने से हमारी मिट्टी में जो खाद प्रकृती ने हमें दिया है उसका एक पदरी स्वरूप में यानि पहली स्टेज में रूपांतरण होने लगेगा तो हमारी फसल को ज्यादा प्रमाण में खाद मिलने लगेगा | इन सब कारण से फसल को ज्यादा प्रमाण में आवश्यक खाद मिलने लगेंगे | **फसल ज्यादा उत्पादन देगी और पहले ही साल में कम से कम ५०% उत्पादन बढ़ेगा | साथ-साथ मिट्टी में सुधार होना शुरू होगा |**

मल्टीप्लायर तथा डार्क ग्रीन पत्ते

किसी फसल के पौधे जिनकी बढ़त रुक गई है तथा पीले होकर मर जाते हैं ,उनमें न फूल आते हैं ,न फल लगते है, अगर फल-फूल आते हैं तो उनका आकार बहुत छोटा-छोटा होता है, जो उत्पादनक्षम नहीं है | पौधों को उत्पादनक्षम बनाने के लिये पत्तों का रंग हरा होना जरुरी है| **हमारे 'मल्टीप्लायर' का उपयोग होने के बाद पत्तों का रंग डार्क ग्रीन हो जाता है** | डार्क ग्रीन पत्तों द्वारा सूर्यऊर्जा की मदद से ज्यादा भोजन तैयार होता है | ज्यादा भोजन मिलने से फसल का सभी तरह का जोरदार विकास होता है तथा उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है |

फल-फूल तथा मल्टीप्लायर

किसान भाइयों ,आपने देखा होगा कि कभी-कभी हमारे पौधों के फूल गिर जाते हैं, यदि फूल गिरते हैं तो फल नहीं बनते और कभी-कभी छोटे-छोटे फल भी गिर जाते हैं तो वे बड़े फल नहीं बनेंगे | इस तरह बड़े फलों की संख्या कम

हो जायेगी या कभी-कभी ऐसा भी होता है कि फूल नहीं आते या कम संख्या में आते हैं | किसान भाइयों , अगर हमें बड़े आकार का फल चाहिए तो फूल भी बड़ा होना चाहिए और अगर हमारे पेड़ में ताकत है, तो फूल बड़ा आएगा और फूल बड़ा आएगा तो बड़े फल में रूपांतरित होता है | इस तरह की समस्याएँ जो हमारी खेती में निर्माण होती हैं, इन सभी समस्याओं का मुख्य कारण होता है कि हमारी फसल को आवश्यक भोज्य पदार्थ की कमी |

फलों व फूलों का असमय गिरना

पौधों को उनका आवश्यक भोजन कम मात्रा में मिलता है, तभी ये सभी समस्याएँ निर्माण होती हैं | फसल को जितना भोजन उसके एक-एक पत्ते तक, फूल तक, फल तक पहुँचाने की आवश्यकता है, उससे अगर कम मिलेगा तो जिस फल तक भोज्य पदार्थ नहीं पहुँचेगा, वो फल नीचे गिर जायेगा | कभी-कभी जब लगातार पौधों को भोज्य पदार्थ कम मिलता है, तब पौधे नियोजन बनाते हैं कि मेरे पास अगर ५०० फल हैं, परंतु भोजन २०० फलों को पोषण तत्व देने तक सीमित है, तब पेड़ खुद भी कभी-कभी उनको गिरा देता है | भोज्य पदार्थ की कमी से भी फूल भी गिरते हैं | भोज्य पदार्थ की कमी की वजह से होनेवाली नुकसानी आपकी फसल में नहीं होगी | आप जब **'मल्टीप्लायर' का उपयोग करते हैं तो आपकी फसल को ज्यादा से ज्यादा भोज्य पदार्थ मिलना प्रारंभ हो जाता है**, इसीलिए 'मल्टीप्लायर' के उपयोग के बाद इस तरह की घटनाएँ नहीं घटती |

अधिक बरसात और सफेद जड़

किसान भाइयों , फूल और फल गिरने का एक कारण हमने देखा | दूसरा उसका सबसे बड़ा कारण यह भी हमें देखने को मिलता है कि आठ या दस दिन तक अगर लगातार बरसात होती है, तथा खेत में पानी भरा रहता है, ऐसी परिस्तिथी में हमारे पेड़ के जो व्हाईट रूट हैं, जिसे हम सफेद जड़ कहते हैं, वह मर जाती है | इन सफेद जड़ों का कार्यकाल ऐसा होता है कि हर आठ दिन में नई सफेद जड़ तैयार होती है और पुरानी मरती है | अगर सफेद जड़ २४ घंटे लगातार पानी के संपर्क में रहती है, तो वो सफेद जड़ मर जाती है | सफेद जड़ अगर मर जाएगी तो भोजन हमारे फूल तक पत्तियों तक नहीं पहुँच सकता | सफेद जड़ के माध्यम से ही भोजन पौधों तक पहुँचता है, अगर पौधों को भोजन मिलना बंद होता है, तब फल भी गिरेंगे, और फूल भी गिरेंगे, तथा पेड़ पौधे कमजोर हो जायेंगे, उनके ऊपर कीड़ और रोग का हमला भी हो जाएगा |

कमजोर फसल पर प्रकृति का हमला

हमारी फसलों को जब भोज्य पदार्थ अच्छी तरह से मिलेगा तो फूल और फल के गिरने का प्रोब्लेम नहीं आएगा और साथ साथ हमारे पौधों पर कीड़ और रोग का हमला भी नहीं होगा | कई बार हम देखते हैं, फूल और फल गिरने के समय रस चूसनेवाले कीटकों का प्रमाण भी बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, सभी घटनाएँ एक के बाद एक घटती हैं | जब हमारी फसल कमजोर हो जाती है, तो प्रकृति उस कमजोर फसल के बीज को आगे नहीं भेजना चाहती | अगर बीज कमजोर होगा, तो आनेवाला फल कमजोर होगा, उसका बीज भी कमजोर निकलेगा, ऐसी फसल प्रकृति नष्ट करना चाहती है इसीलिए उस फसल पर कीड़ और रोग का हमला होता है | जब तक आपकी फसल बलवान है, उसे

आवश्यक मात्रा में भोजन मिल रहा है, उसके उपर कभी भी कीड़ और रोग का हमला नहीं होगा | 'मल्टीप्लायर' खाद आपकी फसल तो बढ़ाने का काम करता है तथा ज्यादा उत्पादन की तरफ आगे ले जाता है | साथ-साथ आपकी फसल को कीड़ और रोग से भी बचाता है |

पत्तों का पीला पड़ जाना

किसान भाइयों , हमारी फसल में कीड़ और रोग लग जाने के बाद फसल के पत्ते कभी कभी पीले हो जाते हैं | पत्तों का पीला पड़ना यह हमारी फसल की आख़री स्टेज होती है | किसी फसल के पत्ते पीले पड जाते हैं तो वो फसल नष्ट होने की कगार पर होती है | ऐसी फसल को बचाना बहुत ही मुश्किल काम है, परंतु आपके पास जो प्रोडक्ट है 'मल्टीप्लायर' उसकी मदद से जिस फसल के पत्ते पीले हो गये हैं , उस फसल को भी बचा सकते हैं | उसके लिये आप १ किलो 'मल्टीप्लायर' मिट्टी में मिलाकर खेत में फेंक दिजीए और छिड़काव करनेवाले पंप में १५ ग्राम 'मल्टीप्लायर' महीन छिद्र वाले कपड़े में बांधकर पानी में ऊपर-नीचे कीजिए उससे 'मल्टीप्लायर' का अर्क उस पानी में चला जाएगा फिर थोड़ा-सा उसमें सर्फ-साबुन मिला दीजिए जिससे वो पानी पत्तों पर गिरने के बाद वहाँ चिपका रहे, आप उस घोल का फसल पर छिड़काव कर दीजिए , जो पत्ते पीले पड़ गये हैं, उनमें भी आपको जल्दी-जल्दी सुधार नज़र आएगा |

पत्तों की शिराएँ हरी होना

आठ दस दिन के बाद उन पत्तों की महीन शिराएँ हरी-हरी नजर आने लगेंगी, मुख्य कोशिकाएँ हरी होने लगेंगी और पत्ते का पूरा भाग १५ से २० दिन में हरा-हरा दिखाई देने लगेगा | पत्ते अगर हरे हो जाते हैं, तब फिर से फूल तैयार होने लगेंगे इस तरह से आपकी पिली हो गई फसल फिर से हरी तथा उत्पादन देने में सक्षम हो सकती है | ये ताकत 'मल्टीप्लायर' की है |

रासायनिक खाद का इस्तेमाल शून्य हो जायेगा

इस तरह से 'मल्टीप्लायर' की मदद से हम हमारे कृषी उत्पाद का रंग रूप बदलेंगे, उसे अधिक उत्पादन की और अग्रेसर करेंगे और जैसे-जैसे हमारा उत्पादन बढ़ता जाएगा, जैसे पहले ही साल कम से कम ५० % उत्पादन बढ़ेगा, उसके बाद बढ़ा हुआ उत्पादन जो आपने लिया है, उससे ज़्यादा उत्पादन अगले साल आएगा, एक दो साल जब उत्पादन आपको बढ़कर मिलता है, तब उसके बाद आप धीरे-धीरे रासायनिक खादों को कम किजीये, हर साल २० % रासायनिक खाद आप कम करते जाईए और खाद कम करने के बाद भी उत्पादन बढ़कर मिलता है, तो रासायनिक खाद को कम करने में कोई चिंता की बात नहीं है | आप धीरे-धीरे खाद कम करते जाएँगे तो ५ या ७ साल में जैसी जिसकी ज़मीन अच्छी या खराब है, किसी को ८ लग सकते हैं, किसी को ९ लग सकते हैं ,आपकी मिट्टी एक दिन १००% ऑर्गेनिक हो जाएगी ,जिस दिन आपके सारे रासायनिक खाद बंद हो जाते हैं, उस दिन आपकी खेती पूरी ऑर्गेनिक हो जाएगी |

रासायनिक खाद बंद उत्पादन ३ गुना

रासायनिक खाद बंद होने के दिन आप देखेंगे कि आपका उत्पादन ३ गुना तक बढ़ गया है | कृष्णा अग्रीबिजनेस डेव्हलपमेंट प्रा.लि.द्वारा निर्मित 'मल्टीप्लायर' अकेला ऐसा उत्पाद है, जो आपके कृषी उत्पाद को ३ गुना तक बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादन के लागत मूल्य के खर्च को काफी कम कर देगा |

मानवीय श्रम में कमी आएगी

इसमें सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि आपका मानवीय श्रम कम हो जाएगा | आज खेती का काम बड़ा मुश्किल हो गया है, मज़दूरों की उपलब्धता मुश्किल हो गई है,और मजदूर की उपलब्धता न होने के कारण कुछ लोगों ने खेती करना बंद कर दिया है | अगर खेती आसान हो जाती है, कीड़ और रोग मुक्त हो जाती है,तो हम थोड़े से मज़दूरों की मदद से, या मशिनरी की सहायता से और कम से कम मज़दूरों की मदद से खेती कर सकते हैं | इस तरह 'मल्टीप्लायर' के इस्तेमाल के बाद आपकी खेती में मानवीय श्रम कम और उत्पादन ३ गुना तक बढ़कर मिलेगा |

रासायनिक खाद कम करते जाईए,मल्टीप्लायर बढ़ाते जाईए

किसान भाइयों ,आप जैसे-जैसे रासायनिक खाद कम करेंगे उतनी क़ीमत का 'मल्टीप्लायर' खाद बढ़ाते जाईये | 'मल्टीप्लायर' की मात्रा बढ़ती जाएगी और रासायनिक खाद की मात्रा कम होती जाएगी, इस तरह से रासायनिक खाद का उपयोग शून्य होने तक आपका कृषि उत्पादन ३ गुना तक बढ़ जाएगा | इसके बाद आपको 'मल्टीप्लायर' का उपयोग धीरे-धीरे कम करना है, ३ गुना तक उत्पादन लेने के लिए अब आपकी मिट्टी बहुत ही सक्षम हो गई है | प्रकृती ने इस मिट्टी को जैसे बनाया था वैसी हो गयी है | अब इसमे किसी प्रकार का प्रॉब्लेम नहीं रह गया है, अब ये मिट्टी पूरी तरह से आपकी फसलों को बढ़ाने का और कीड़ व रोगमुक्त रखने का काम करनेवाली है |

रासायनिक खाद का उपयोग शून्य होते ही मल्टीप्लायर का इस्तेमाल धीरे-धीरे कम करना है |

अब हमें ज़्यादा खाद की आवश्यकता नहीं है, हमारा उत्पादन बढ़कर ३ गुना जब हो जाता है, तब रासायनिक खाद पूरे बंद हो जाते है | उसी दिन से हम धीरे-धीरे 'मल्टीप्लायर' का उपयोग कम करेंगे| यह समझ लीजिए कि जितनी लागत का 'मल्टीप्लायर' हम आज डालते हैं, उसकी मात्रा ७५% कम कर देते हैं ,तब भी हमारा उत्पादन ३ गुना तक लगातार मिलता रहेगा| हमारा लागत खर्च ७५% से कम होकर सिर्फ २५% रह जाएगा तब लागत खर्च २५% और उत्पादन ३ गुना हो जाएगा|

प्राकृतिक खाद की उपलब्धता बढ़ जाएगी

किसान भाइयों,जैसे हमने कहा कि रासायनिक खाद बिलकुल कम कर देना है, तो आप इस बात मे बिलकुल संशय मे ना रहिए, आप सोचेंगे की रासायनिक खाद के बिना खेती कैसे हो सकती है | हमारी मिट्टी के अंदर प्रकृती

ने, जो खाद हम बाहर से डाल रहे हैं, वह मिनरल्स के रूप में पहले से दिए हैं, आज हमारी मिट्टी खराब हो गई है, और वह खाद हमारी फसल को उपलब्ध नहीं हो रहा है| हमारे सूक्ष्म जीवाणुओं के उपलब्धीकरण की क्षमता से बाहर हो गया है, इसीलिए हम मिट्टी मे 'मल्टीप्लायर' को मिलाकर प्रकृती ने मिट्टी मे जो खाद बिनामुल्य दिए हैं ,उन्हें आपकी फसल को सहजता से मिलने लायक बनाते हैं | हमारी मिट्टी में प्रकृती द्वारा उपलब्ध कराया गया खाद इतने ज्यादा प्रमाण में उपलब्ध है कि हम लाखों वर्ष खेती करेंगे तब भी हमें अलग से खाद डालने की आवश्यकता नहीं होगी |आपकी मिट्टी में उपलब्ध सभी प्राकृतिक खाद सक्रिय होनेवाले हैं | आपको अलग से डालना नही हैं | आप मन मे किसी प्रकार का संशय ना रखिये की रासायनिक खाद जरुरी है |

कीड़ और रोग धीरे-धीरे कम होंगे

किसान भाइयों,कीड़ और रोग आपकी फसल में कैसे रुकेगा इसके बारे में अभी विस्तार से हम आपको जानकारी देना चाहते हैं | अभी तक हमने इतना ही कहा कि कीड़ और रोग धीरे-धीरे कम होंगे | रासायनिक दवाइयों के छिड़काव कम हो जाएँगे | परंतु ये क्रिया कैसे होगी, ये समझना जरुरी है | प्रकृती की सारी रचना 'जीवे जीवष्य जीवनम' पर आधारित होती है | हम देखते हैं कि बिल्ली चूहे को खाती है,शेर हिरन को खाता है, दोनों का जीवन एक दूसरे पर आधारित है | हम अगर पालक की सब्जी खाते हैं ,तो पालक की सब्जी भी सजीव है, उस पालक में जीव है, इसीलिए उसकी ग्रोथ होती है,| जहाँ पर डेड एंड है, वहाँ पर ग्रोथ नहीं होती, जहाँ-जहाँ भी सजीवता है, वहाँ उसका बढ़ना,फलना,फूलना, हिलना, डूलना होता है, ये सभी सजीवता के लक्षण है| हम जितना भी सब्ज़ियों एवं फलों का सेवन करते हैं, ये सब कुछ सजीव है| फल धीरे-धीरे छोटे से बड़ा होता है, वो सजीव है, हम जब किसी भी भोज्य पदार्थ का सेवन करते हैं तब उस सजीव को हमने भक्षण किया है, मतलब एक सजीव दूसरे सजीव का भोजन है |

शेर कमजोर हिरन को खाता है |

इस संदर्भ मे हम आपको एक उदाहरण बताना चाहते हैं कि जब हम जंगल में सफारी करने जाते हैं, तब उस जंगल से संबंधित कुछ लोग हमारे साथ होते हैं | अगर आप जंगल के शेर के बारे में मालूमात लें तो शेर को जब भूख लगती है, तो वो शिकार करने के लिये बाहर आता है | अगर उसे हिरन का झुंड दिखाई देता है, तो उस हिरन के झुंड मे से एक हिरन को पकड़कर खाने की क्षमता और ताकत शेर में होती है, परंतु वो ना उसे पकड़ता है, ना खाता है वो सिर्फ एक दहाड़ लगाता है और उस आवाज के डर से हिरन भागते हैं, तथा आवाज की विपरीत दिशा मे भागते हैं ,और शेर भागनेवाले हिरन को देखता है,जो हिरन बलवान हैं, वो सबसे आगे भागते हैं, जो थोड़े कमजोर हैं वो भागने मे थोड़ा पीछे रह जाते हैं ,शेर देखता है और जो हिरन सबसे पीछे रह गया है, उसको पकड़ता है और खाता है, उसे प्रकृती का आदेश है | हम जो भी कुछ करते हैं या जो घटता है, हम कहते हैं कि उसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता | शेर को प्रकृती का आदेश है, जो कमजोर है उसे खा लो |

जीवे जीवष्य जीवनम्

पृथ्वी पर भी जो कमजोर है, उसे नष्ट करने का कार्य प्रकृती द्वारा किया जाता है | बिल्ली अगर चूहे को खाती है तो जो चूहा बलवान है, वो भाग जाता है और जो कमजोर है, वो बिल्ली के चंगुल में फंस जाता है | बलवान को बचाना तथा कमजोर को नष्ट करना और इस सजीव सृष्टी को बलवान बनाए रखना प्रकृती की व्यवस्था का भाग है |

प्राणवायू और विषाणू

किसान भाइयों, हमारी फसल को कमजोर करने का जो कार्य है, वो मिट्टी के अंदर से होता है, वह सूक्ष्म विषाणुओं के द्वारा किया जाता है | हमने बहुत सी चर्चा जीवाणुओं के बारे में की है, अब हम थोड़ी चर्चा विषाणूओ के बारे मे करेंगे | हमारी मिट्टी के अंदर ऑक्सीजन की मात्रा अगर ज़्यादा हो तो उसमें सूक्ष्म जीवाणू ज्यादा रहते हैं, और जहाँ-जहाँ ऑक्सीजन कम होता है, वहाँ-वहाँ विषाणु जन्म लेते हैं, विषाणुओं के जन्म लेने की जो क्रिया है, इसके लिये कोई बीज नही डालना पड़ता, ये परिस्थिती के अनुसार वहाँ पर घटित होती है, विषाणु जन्म लेकर हमारी फसल की जड़ों से सारा अर्क खींचकर अपनी संख्या बढ़ाते हैं और फसल को कमजोर कर देते हैं |

पौधों के भोजन की चोरी

फसल को भोजन नहीं मिलने से वह कमजोर होती है, फूल गिरते हैं , फल गिरते हैं और पत्ते पीले हो जाते हैं | ऐसे समय मे हम सोचते हैं कि हमने हमारी फसल को बहुत सारा खाद दिया है, उसकी जरुरत से ज्यादा दिया है, उसके बाद भी हमारी फसल विपरीत लक्षण क्यों दिखा रही है ? इसका कारण यह है कि,पौधों की जड़ों से पौधो के भोजन की चोरी हो रही है ,उस चोरी को रोकने मे हम अक्षम हैं , हमारे पास आज ऐसी कोई सिस्टम नही है, जिससे हम विषाणुओं को फसलों का भोजन चुराने से रोक सकें |

प्रकृती कि इच्छा के विरुद्ध प्रयास

सिर्फ हम ही नही, पूरी दुनिया के अंदर जब-जब भी फसल कमजोर होती है, कमजोर फसल को नष्ट करने के लिये प्रकृती उस पर कीड़ और रोग का हमला करती है | कीड़ और रोग का हमला होते ही हम फसल पर ज़हरीली दवाइयों का छिड़काव करते हैं | किसान भाइयों ,आपने अनुभव किया होगा कि, किसी फसल मे एक दो बार छिड़काव से नियंत्रण मिलता है, परंतु जब आप बार-बार छिड़काव करते हैं , कीड़ और रोग समाप्त होने की जगह बढ़ते जाते हैं | ज्यादा शक्तिशाली दवा डालने के बाद भी कीड़ नहीं मर रही है, इसका कारण ये होता है कि प्रकृती उस फसल को नष्ट करना चाहती है, और आप उस फसल को जीवित रखना चाहते हैं , मतलब प्रकृती कि इच्छा के विरुद्ध आप कार्य कर रहे हैं | किसान भाइयों , प्रकृती की इच्छा के विरुद्ध कोई भी इन्सान कुछ भी नहीं कर सकता | वो सर्वोच्च है वो सर्वश्रेष्ठ है | आज तक उसकी ही इच्छा चलती आ रही है, हमें उसकी इच्छा के साथ अपने आप को जोड़कर उसके साथ चलना है | हमें उसका विरोध नहीं करना है, प्रकृती कोई सरकार नहीं है कि मोर्चा निकाला और उसका विरोध कर दिया, यह इतना आसान काम नहीं है | हम जिस कीड़ और रोग के लिये छिड़काव कर रहे

हैं, उन कीड़ों मे हमारी दवाई का प्रतिकार करने की शक्ती आती है, और उनकी नई पीढ़ी इस दवा कि प्रतिकार शक्ती लेकर जन्म लेती है,इसीलिए इस दवा का उन पर कोई असर नहीं होता |

विषकन्या और प्रतिकार शक्ति

राजा महाराजाओं के जमाने में भी विषकन्या हुआ करती थीं | अगर किसी व्यक्ति को खत्म करना है और गुपचुप तरीके से करना है, तो वहाँ विषकन्या को भेजा जाता था और वो उसे मार डालती थी | इस विषकन्या मे ज़हर कैसे आया? धीरे-धीरे उसे थोड़ा-थोड़ा जहर दे-दे कर उसके अंदर उसकी प्रतिकार शक्ति निर्माण की गई, परंतु उसके शरीर में जो ज़हर जमा हुआ है, वो किसी व्यक्ति को मार डालने में सक्षम है | परंतु उस विषकन्या को उस ज़हर से कोई नुकसान नहीं होता क्योंकि उसमें ज़हर की प्रतिकार शक्ति निर्माण हो गई है |

प्राणवायु में वृद्धी से विषाणुओं का खात्मा

फसलों पर आनेवाले कीड़ एवं रोग से निजात पाने का उत्तम तरीका, आपकी कंपनी के प्रोडक्ट 'मल्टीप्लायर' में है, जब आप, आपकी मिट्टी में 'मल्टीप्लायर' देंगे, ये 'मल्टीप्लायर' वहाँ सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ाएगा जैसे-जैसे मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं कि संख्या बढ़ती जाएगी, मिट्टी नरम होती जायेगी उसके ऊपर चलने पर आपके पाँव नीचे दबेंगे, वह मिट्टी स्पंज के समान महसूस होगी | उस मिट्टी मे ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाएगी | ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ने के बाद वहाँ विषाणू जिंदा नहीं रह सकते क्योंकि ऑक्सीजन में विषाणू मर जाते हैं | हम पूरी तरह से प्रकृती की इच्छा के अनुसार कार्य करेंगे | 'मल्टीप्लायर' उपयोग करने से विषाणू अपने आप मर जाएँगे | ऑक्सीजन की मात्रा अपने आप बढ़ जाएगी, और हमारी फसल कीड़ और रोग से मुक्त हो जाएगी | किसान भाइयों ,किसी भी काम मे हम प्रकृति की सिस्टम के साथ चल कर ही समस्या पर विजय प्राप्त कर सकते हैं लेकिन प्रकृति के विरुद्ध जाकर नहीं |

केंचुओं का आगमन

किसान भाइयों, अब इसके पहले हमने देखा कि मिट्टी में सुधार होने से आपका कृषी उत्पादन बढ़ेगा, लागत खर्च कम होगा, मतलब फायदा ही फायदा और ७-८ वर्ष में जब आपका रासायनिक खाद का इस्तेमाल शून्य हो जाएगा, उसके बाद आपको 'मल्टीप्लायर' खाद का खर्च भी धीरे-धीरे कम करना है | अब ये सारी बातें कैसे संभव होनेवाली है ? इन चीज़ों को संभव बनाने की मुख्य क्रिया, जो यहाँ होनेवाली है, उसके संदर्भ में हम बात करेंगे | हम 'मल्टीप्लायर' खाद का इस्तेमाल उत्पादन के ३ गुना बढ़ने के बाद कम करनेवाले हैं क्योंकि हमारी मिट्टी के अंदर केंचुए (जिन्हें हम मराठी भाषा में गांडूळ और गुजराती भाषा में अलसिया कहते हैं) अपना कार्य शुरू करने वाले हैं | केंचुओं का कार्य मिट्टी मे संपूर्ण सुधार शुरू होने के बाद ही शुरू होगा, ऐसा नही है, एक या दो वर्ष तक आपकी मिट्टी में हमारे खाद 'मल्टीप्लायर' का इस्तेमाल होने के बाद, अगर ज्यादा खराब मिट्टी है तो ३ या ४ वर्ष में और अगर कम खराब है, तो दूसरे ही साल में आपको मिट्टी मे केंचुए नज़र आने लगेंगे | किसान भाइयों, केंचुए हमारी मिट्टी के कार्यकारी संचालक हैं, मालिक हैं , हमें लगता है कि ये ज़मीन हमारी है, भले ही ७/१२ पर जरूर हमारा नाम है,

परंतु इस मिट्टी का असली मालिक केंचुआ है |

केंचुए की जिम्मेदारी

प्रकृति ने इस मिट्टी को बनाने के साथ यहाँ पर सारी वनसंपदा अपने आप बनती रहे, बढ़ती रहे, फले-फूले इसकी सारी जिम्मेदारी इस मिट्टी को शुद्ध रखने की , इस मिट्टी को विषाणुओं से मुक्त रखने की, इस मिट्टी को उपजाऊ बनाने की, अधिक उत्पादनक्षम बनाने की, ये सारी जिम्मेदारियाँ केंचुए के ऊपर सौंपी हैं | केंचुआ अपनी उपजीविका का पालन करते-करते ऑटोमेटीकली इन जीम्मेदरियों को निभाता जाता है| उसे कहीं भी यह महसूस नहीं होता कि मैं मिट्टी को सजीव बना रहा हूँ | केंचुआ अपनी आवश्यकता की पूर्ती करता है और साथ-साथ मिट्टी की आवश्यकता की पूर्ती होती जाती है | मिट्टी ज्यादा सक्षम और उपजाऊ बनती जाती है |

एक केंचुआ १० ग्राम खाद

किसान भाइयों, हमारी खेती के एक चौरस फीट क्षेत्र में लगभग एक केंचुआ अपना कार्य करता है, तो एक एकर के ४३ हजार चौरस फीट के क्षेत्र में लगभग ४० हजार केंचुए कार्यरत रहेंगे | केंचुआ एक दिन में १० ग्राम खाता है, उसमें ८ ग्राम मिट्टी और २ ग्राम सेंद्रिय पदार्थ खाता है | सेंद्रिय पदार्थ के तौर पर हमे बाहर से कुछ नही डालना पड़ेगा, हमारी मिट्टी में पौधे की जड़ें जो मिट्टी में रह जाती हैं वह सेंद्रिय पदार्थ मे रूपांतरित हो जाती हैं | पौधे के द्वारा गिरने वाले पत्ते, छोटी-छोटी शाखाएँ, फूल , फल, जो भी कुछ गिरता है, वो मिट्टी मे सड़ने के बाद सेंद्रिय पदार्थ मे परिवर्तित हो जाता है| ये सेंद्रिय पदार्थ हमारी मिट्टी को अनायास मिलते हैं , हमें अलग से नहीं देने पड़ते हैं , वो केंचुए का खाद्य है | २ ग्राम सेंद्रिय पदार्थ और ८ ग्राम मिट्टी वो खाता है और १० ग्राम खाने के बाद वो लगभग इतना ही १० ग्राम खाद हमारी मिट्टी को वापस देता है |

विदेशी केंचुआ

सन २००४ के बाद जब हमारे यहाँ ऑर्गेनिक खेती का प्रचार और प्रसार बढ़ा, हमारी सरकार विदेशों से कुछ केंचुए लेकर आई और वे केंचुए किसानों को दिए गए कि,उससे खाद बनाओ और खेती में इस्तेमाल करो | कुछ लोग उन केंचुओं को बेचने लग गये, लगभग ३०० से ८०० रु किलो तक केंचुओं की बिक्री हुई, और कुछ लोगों ने काफी पैसा भी बनाया, परंतु किसान भाइयों , जो केंचुआ विदेश से यहाँ आया था वह केंचुआ सिर्फ सेंद्रिय पदार्थ ही खाता था वो मिट्टी नहीं खाता था | इसीलिए हमारे किसान भाइयों को बहुत बड़ी मात्रा में सेंद्रिय पदार्थ की व्यवस्था करनी पड़ती थी | केंचुओं की देखरेख करना, फिर वहाँ की खाद निकालना, केंचुए अलग करना, फिर उस खाद को खेतों मे डालना बहुत ही श्रम का काम था और खर्चिक भी था |

केंचुआ और विषाणूमुक्त मिट्टी

आपकी मिट्टी में जो केंचुए आज हैं, वो वही खाएँगे जो मिट्टी में उपलब्ध है, और आपको खाद देंगे | हमारे 'मल्टीप्लायर' में यह ताकत है कि मिट्टी में जो केंचुए हैं, उनको एक्टिव करना, उनको वहाँ रहने के लायक

परिस्थितियों का निर्माण करना और आपकी मिट्टी को केंचुए के खाद से उपजाऊ बनाना तथा विषाणुओं से मुक्त करना |

स्वयं देखें केंचुआ

किसान भाइयों, हमारी मिट्टी में जो केंचुए हमारे पूर्वजों के समय कार्यरत थे, और खेती बड़ी आसानी से हो रही थी, वह केंचुए कहीं भी भागे नहीं हैं, सिर्फ लायक परिस्थितियाँ ना होने के कारण वो धीरे-धीरे नीचे की तरफ़ चले गये हैं | कोई भी मिट्टी को जहाँ आपने पिछले १० सालों में एक भी केंचुआ नही देखा, वहाँ भी केंचुआ २ से ३ मीटर नीचे जाकर आराम कर रहा है | आप अगर इन केंचुओं को देखना चाहते हैं और वहाँ देखना चाहते हैं, जिस मिट्टी में आपको कभी केंचुआ नजर नहीं आया, तो आप ५० ग्राम 'मल्टीप्लायर' १० लिटर पानी में मिलाकर काड़ी-कचरे को उससे गीला करके वो काड़ी-कचरा एक जगह डाल दो इस कचरे को (ये बरसात के अंदर करना है)हिलाना नहीं है| २ से ३ महिने के बाद जब बरसात कम हो जाती है, तब आप इस कचरे को थोड़ा हटाने का प्रयत्न करें, आप देखेंगे कि कचरा जब आप हटाने की कोशिश कर रहे हैं, तो ऊपर की लेअर में कचरा दिख रहा है, परंतु ऊपर की लेअर हटाते ही आपको खाद ही खाद नजर आयेगा और वो खाद जैसे-जैसे आप हटाते जाएँगे, केंचुए ही केंचुए नजर आने लगेंगे | दोस्तों एक घमेला कचरा 'मल्टीप्लायर' के घोल में भिगोकर वहाँ डाला था, आप इस एक घमेले खाद और नीचे की मिट्टी में लगभग ५०० केंचुए प्राप्त कर सकते हैं |

केंचुआ तथा उसका व्यायाम

केंचुए हर दिन १० ग्राम खाएँगे और १० ग्राम खाद हमारी मिट्टी की ऊपरी सतह पर डाल देंगे | आप मिट्टी के ऊपर के लेअर पर जब देखेंगे तो केंचुआ जो खाद डालता है, वो दानेदार मिट्टी होती है, और वजन में हल्की होती है, जिसे आप आसानी से पहचान सकते हैं | जगह-जगह आपको केंचुए का खाद नजर आयेगा | केंचुआ १० ग्राम खाने के बाद जमीन मे २ या २.५ फुट के लेअर मे ऊपर से नीचे तथा नीचे से उपर आता है | हम देखते हैं कि शहरी लोग खाना खाने के बाद प्रायः टहलने जाते हैं, जिससे उनका शरीर चुस्त रहे या योग या व्यायाम करते हैं क्योंकि जो आपने खाया है, उसे पचायेंगे नहीं तो बीमार पड़ जायेंगे | आप बीमार पड़ते हैं, तो आपके पास डॉक्टर है, परंतु केंचुए के लिये कोई डॉक्टर नहीं है इसीलिये केंचुए अपने स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिये १० ग्राम खाने के बाद व्यायाम करते हैं और उनका व्यायाम यह है कि मिट्टी में छिद्र करते हुए ऊपर से नीचे जाना तथा नीचे से उपर आना |

लाखों छिद्र तथा विषाणुओं का खात्मा

केंचुओं के ऊपर-नीचे होने के कारण हमारी मिट्टी मे लाखों करोड़ों छिद्र हो जाते हैं, उन छिद्रों में ऑक्सिजन भर जाता है, जिससे हमारी मिट्टी में ऑक्सिजन का प्रमाण बढ़ता है, केंचुए जब नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे जाता है, तो उसके मार्ग में अगर कोई भी हानिकारक विषाणू और हानिकारक फफुंद (बुरशी) उसे दिखाई देती है, उसे खा जाता है |

अक्टिनोमायसिटीज तथा शुद्ध मिट्टी

केंचुए के पेट में प्रकृति ने एक ऐसी अणुभट्टी बनाई है कि जब वो हानिकारक विषाणुओं को खाता है तो उसे नष्ट कर देता है, मार डालता है, परंतु यदि केंचुआ अक्टिनोमायसिटीज नाम के जीवाणू को खाता है, तो एक का १००० बनाता है| किसान भाइयों, अक्टिनोमायसिटीज ये वो जीवाणू है जो हमारी मिट्टी की ऊपर की सतह मे होते हैं | ये जीवाणू मिट्टी को शुद्ध रखने का काम करते हैं | हानिकारक विषाणुओं से मिट्टी को बचाने का कार्य करते हैं |ये जो श्वास छोड़ते हैं, उससे हानिकारक विषाणू मर जाते हैं | इसीलिए ये जहाँ भी होते हैं, मिट्टी मे कोई भी हानिकारक विषाणू जिंदा नहीं रह सकता | आपने कभी-कभी देखा होगा कि अगर हमारे पश्चिम दिशा में बारिश के मौसम की पहली बरसात होती है, तब खुशबू से पता चल जाता है कि पश्चिम दिशा में बरसात हुई है| उस खुशबू को हम मिट्टी कि खुशबू कहते हैं | वास्तव में वो अक्टिनोमायसिटीज के जिंदा होने की खुशबू है | हमारे जितने भी अच्छे जीवाणू हैं, जो मिट्टी के लिये आवश्यक हैं, इन सभी जीवाणुओं में समाधी में जाने का गुणधर्म होता है यह विशिष्ट गुणधर्म प्रकृति ने इन्हें दिया है| जब लायक परिस्थितियाँ ना हों तो ये समाधी में चले जाते हैं | और जैसे ही बरसात होती है, इन पर पानी पड़ता है और मिट्टी गीली हो जाती है ये एक्टिव हो जाते हैं | इनके जिंदा होने से जो खुशबू वातावरण में फैलती है उस खुशबू से हमें आभास होता है कि बरसात हुई है |

एक से एक हज़ार

अक्टिनोमायसिटीज हमारी मिट्टी के लिये बहुत जरुरी तथा आवश्यक जीवाणू है, जितनी ज्यादा संख्या इनकी बढ़ेगी उतनी ज्यादा हमारी मिट्टी हानिकारक विषाणुओं से मुक्त रहेगी और मिट्टी अगर हानिकारक विषाणुओं से मुक्त हो तो वहाँ पर होनेवाला उत्पादन कीड़ और रोग से मुक्त होगा | हमारा केंचुआ जब इस अक्टिनोमायसिटीज को खा जाता है, तो इसकी अणुभट्टी में, जहाँ विषाणु समाप्त हो जाते है , वहाँ अक्टिनोमायसिटीज एक अक्टिनोमायसिटीज से एक हजार पैदा होते हैं, और उस केंचुए खाद के साथ हमारी मिट्टी के उपरी सतह पर कार्यरत रहते हैं |

केंचुआ और वाफसा कंडीशन

केंचुए के द्वारा बनाये गए लाखों छिद्र के कारण हमारी मिट्टी मे ऑक्सिजन की मात्रा बहुत ज्यादा प्रमाण मे बढ़ जाती है | जहाँ भी जगह खाली है, वहाँ ऑक्सिजन भर जाता है, ये एक ऑटोमैटिक प्रक्रिया है, ज्यादा बारीश हमारी मिट्टी के लिये हानिकारक है | हमारी फसल को हानिकारक है |जब बरसात होती है और ज्यादा समय तक चलती है, तो ऐसी स्थिती मे हमारी मिट्टी मे इतना ज्यादा पानी भर जाता है कि पौधों का बहुत सा भाग पानी में डूब जाता है | ६ इंच या एक फीट तक पानी कभी-कभी खेतों मे भरा रहता है और ये फसल के लिये हानिकारक है | केंचुए जिस मिट्टी में कार्यरत होते हैं उस मिट्टी में यह स्थिती निर्माण नहीं होती| जैसे जैसे पानी मिट्टी पर गिरता है, करोड़ों छिद्रों द्वारा नीचे चला जाता है, मिट्टी मे परक्युलेट हो जाता है, मिट्टी को ठंडा करता है, मिट्टी के नीचे के भाग मे पानी का

संचय बढ़ाता है | लाखों छिद्रों के कारण ऊपर की जो सतह है वह हमेशा वाफसा कंडीशन मे रहती है, जिससे कि हमारे पौधों को मिट्टी से भोजन मिलता रहे | अगर खेत में पूरा पानी भरा रहेगा तो फसल की सफेद जड़ें (व्हाइट रुट्स) मर जायेंगी और सफेद जड़ें (व्हाइट रुट्स) अगर मर जाती हैं तो फसल को भोजन मिलना बंद हो जाता है | फसल बढ़ना रूक जाती है, लाखों करोड़ों छिद्र हमारी मिट्टी के लिये बहुत ही जरुरी हैं और जहाँ केंचुए हैं, वहाँ ये छिद्र हमें मिलते हैं |

दो लाख रु.का मुफ़्त खाद

किसान भाइयों ,अगर एक चौरस फ़ीट मे एक केंचुआ कार्यरत है, तब एक एकर में लगभग ४० हजार केंचुए हर रोज़ ४०० कि. ग्रा. खाद का निर्माण करेंगे | हमारे यहाँ बरसात का जो समय है, उसे लगभग हम १०० दिनों का अगर पकड़ते हैं, तब १०० दिन तक हमारी मिट्टी की जो कंडीशन है, वो केंचुए के लिये फेव्हरेबल है कि वो १०० दिन काम करेगा | १०० दिन के काम में हर दिन अगर वो ४०० कि.ग्रा. खाद बनाते हैं तो १०० दिन में लगभग ४० टन खाद हमारी मिट्टी में बनायेगे | ४० टन खाद अगर हम ५ रु कि.ग्रा. से खरीदते हैं तो इस खाद की क़ीमत होती है २ लाख रुपये | किसान भाइयों ,आपमें से बहुत से किसानों ने कभी केंचुए का खाद खरीदा होगा उसे खेत में भी डाला होगा | अभी हम बहुत सारे सेंद्रिय खाद खेत में इस्तेमाल करते हैं | जैसे गोबर का खाद, भेड़ बकरी का खाद उसी तरह से केंचुआ खाद, ये केंचुआ खाद दूसरे खादों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ माना गया है |

केंचुआ खाद तथा आपकी फसल

यह खाद अगर कोई किसान एक टन भी खेत में डाल दे तो उसके उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि होती है, फसल का रंगरूप बदल जाता है, फसल ऐसी दिखती है, जैसे पहले कभी देखी नही थी| फसल कीड़ और रोग से बहुत से प्रमाण मे नियंत्रण में दिखती है | आपकी खेती में जब रासायनिक खाद का प्रयोग बंद हो जाएगा तो हर उस किसान के खेत मे जो सिर्फ बरसात की ही खेती करता है | २ लाख रु. का केंचुए का खाद प्रकृती आकर आपकी खेती मे डाल देगी | हम प्रकृति के साथ चलकर एक एकर खेती मे लगभग २ लाख रुपये तक का केंचुए का खाद प्राप्त कर सकते हैं |

पाँच लाख रु. का मुफ़्त खाद

किसान भाइयों ,हमारे बहुत से किसान भाई साल में २ फसल लेते हैं | कुछ किसान भाइयों के पास फलों के बगीचे हैं वे ८ से ९ महीने तक फसल को एक्टिव रखते हैं, तो ९ महीने तक उनकी मिट्टी कार्यरत होती है | हमने ३ महिने तक देखा कि लगभग २ लाख रु. तक का केंचुआ खाद बनता है, अगर यह ८ से ९ महीने खेती होती है, तो लगभग ५ से ६ लाख रुपये का केंचुआ-खाद उस खेती में सुधार के बाद मिलनेवाला है | ५ या ६ लाख रुपये क़ीमत का खाद डालते हैं तो उत्पादन कितना आएगा इसकी आप कल्पना नहीं कर सकते | इसीलिए हम बता रहे हैं कि 'मल्टीप्लायर' आपके उत्पादन को ३ गुना कर देगा | आपके उत्पादन की साइज़ कहाँ से कहाँ ले जाएगा | केंचुए के खाद से आपकी

मिट्टी सोने के जैसे हो जानेवाली है | १००% उपजाऊ मिट्टी बनने वाली है, जब प्रकृति ने हमें ये सबकुछ दिया है, बिनामुल्य दिया है, तो क्यों हम इसके लिये पैसा व्यर्थ करें ?

एकमात्र कंपनी

आपने बहुत सी कंपनियाँ देखी होंगी जो आपको उत्पादन बेचते हैं | कोई भी कंपनी यही चाहती है कि जिंदगी भर आप उसके उत्पादन को खरीदते रहें, वो आपको उत्पादन बेचते रहें और वे आपसे करोड़ों रुपये कमाते रहें |आपकी कंपनी कृष्णा एग्रीबिजनेस डेव्हलपमेंट प्रा.लि. एकमात्र ऐसी कंपनी है, जिसका उद्देश आपके उत्पादन को बढ़ाने के साथ-साथ मुख्य उद्देश के रूप में आपकी मिट्टी को शुद्ध बनाना है, प्रकृति ने दी हुई मिट्टी के जैसी बनाना है,आपकी लागत को कम करना है,आपकी आश्रयात हम पर कम कर देना है और जो भी कुछ प्रकृति ने हमे मुफ़्त दिया है, वो ले लेने की क्षमता आपकी मिट्टी मे निर्माण करना है |

हर रोज़ छिड़काव

किसान भाइयों,आप 'मल्टीप्लायर' का इस्तेमाल करते-करते धीरे-धीरे इसके परिणामों को देखेंगे और मिट्टी में सुधार भी देखेंगे, उत्पादन में बढ़त देखेंगे और कीड़ और रोग पर कंट्रोल देखेंगे |आज खेती इतनी कठिन हो गई है कि इसमें ज्यादा मानवीय श्रम की जरुरत है, हमारे कई किसान भाई जैसे अनार वाले, अंगूर वाले, सुबह १ स्प्रे करते हैं तो शाम को दूसरे स्प्रे की तैयारी करते हैं | शाम को एक स्प्रे किया नहीं कि दूसरे दिन सुबह उन्हें लगता है कि यह एक घटक तो मारना रह ही गया, जिससे ये एक प्रॉब्लेम कंट्रोल होनेवाला है, हर प्रॉब्लेम पर अलग अलग दवा, कितनी दवा छिड़केंगे आप ?

छिड़काव से मुक्ति...खेती आसान

किसान भाइयों ,आपकी कंपनी ने 'मल्टीप्लायर' की मदद से खेती करना फायदेमंद तो बनाया है, साथ-साथ आसान भी बनाया है | आज जहाँ २ और ५ एकर खेती करना मुश्किल हो गया है | मैन पॉवर जुटाना मुश्किल हो गया है | आप १०० एकर खेती भी 'मल्टीप्लायर' के साथ करें, तो उसे १ या २ सहायकों की मदद से कर सकेंगे| खेती की सारी क्रियाएँ जो आप और हम कर रहे हैं, ये कुछ करनी नहीं पड़ेंगी | आपको फसल लगाना है तो 'मल्टीप्लायर' खाद डालना है और उत्पादन लेना है |

खेती व्यवसाय प्रगती की ओर

कीड़ और रोग से इसका पूरा संबंध खत्म हो जाएगा | कोई कीड़ आप की फसल खराब करने के लिये आपकी खेती में नहीं आएगा | क्यों ? क्योंकि आपकी फसल का कुपोषण नहीं होगा | आपकी मिट्टी में जब केंचुए कार्य करने लगेंगे तो इतना खाद बनेगा की हमें और खाद डालने की आवश्यकता नहीं होगी| तब सारी दुनिया कहेगी खेती उत्तम, धंदा मध्यम | खेती को आज सबसे कनिष्ठ माना गया है और वो सबसे उत्तम क्षेत्र में आ जाएगी |

फूड पॉइज़निंग और हम

किसान भाइयों , हमारा और फसल का आपस मे घनिष्ठ संबंध है जैसे हम सजीव हैं, वैसे हमारी फसल सजीव है दोनों की सिस्टम एक जैसी है अगर हमारे खाने मे फूड पॉइज़निंग हो जाए कुछ खराब खाना खाने में आ जाए तो हमें तकलीफ हो जाती है | हम बीमार पड़ जाते हैं, डॉक्टर से दवा लेते हैं, ज्यादा तकलीफ हुई तो डॉक्टर हमें बोलते हैं, हमें २-३ दिन आराम करना पड़ेगा | आराम के बाद हमारे शरीर में थोड़ी शक्ति आती है, उसके बाद ही हम श्रम करने योग्य बनते हैं | छोटी-सी फूड पॉइज़निंग से हम बीमार पड़ जाते हैं | फसल पर जो दवा मारी जा रही है, वो अगर गलती से कोई पी ले तो मर सकता है| आपने हज़ारों ख़बरें पढ़ी होंगी कि किसी ने खेती की दवा पी ली और मर गया | साधारण फूड पॉइज़निंग से भी हम २-४ दिन अस्वस्थ रहते हैं और खेती की दवा पीते हैं, तो मर सकते हैं | हम पर ये दवाइयाँ इतनी हानिकारक हैं, तो हमारे पौधों पर ये कितनी हानिकारक होंगी |

कुपोषण तथा कीड़ और रोग

पौधों के कुपोषण होने पर प्रकृति की सिस्टम उसे नष्ट करने के लिये एक्टिव होती है और उस पर कीड़ और रोग का हमला कर देती है | पौधा कमजोर है, और उस कमजोर पौधे पर कीड़ और रोग को मारने के लिये हमने जहर का प्रयोग किया | ज़हर उस पेड़ के फूलों में , पत्तों में तथा सभी भाग में समा जाता है| थोड़ा-सा ज़हर पीते हैं, तो हम मर जाते हैं | यहाँ पूरे पेड़ पौधों को हमने ज़हर से नहला दिया है, तो आप थोड़ा सोचिए कि पौधों का क्या होगा ?

मल्टीप्लायर तथा ज़हर के छिड़काव से मुक्ति

पौधा कब तंदुरुस्त होगा और कब आपको उत्पादन देगा ? तंदुरुस्त होने का तो हम इंतजार ही नहीं करते, फिर से एक छिड़काव , फिर से एक छिड़काव, हम उस पर ज़हर ही ज़हर मारते हैं | मित्रों लगातार ज़हरीले छिड़काव से हमारी फसल कमजोर हो जाती है, सामर्थ्यहीन हो जाती है | अपने खुद के रक्षण की ताकत इसमें नहीं रहती | आपकी कंपनी कृष्णा अग्रीबिज़नेस डेव्हलपमेंट प्रा. लि. का मुख्य मिशन है, फसलों को कीड़ और रोग से मुक्त बनाना | हमारा 'मल्टीप्लायर' खाद इसमें काम करेगा | 'मल्टीप्लायर' खाद का इस्तेमाल होने के बाद आप की फसल पर ज़हर का छिड़काव नहीं करना पड़ेगा |

पिटता वही है जो कमजोर होता है

अगर जहर का छिड़काव ना करना पड़े तो आपकी फसल ताकतवर बनेगी | मित्रों अगर दो लोगों का आपस मे झगड़ा हो जाए और जिसकी गलती है, वो शरीर से बलवान है, तो दूसरा आदमी उस बलवान के उपर शारीरिक हमला नहीं करता, अपना विरोध भी बड़ी नम्रता से प्रदर्शित करता है| परंतु जिसकी गलती है, वो कमजोर है, तो बलवान उसे एक लगा देता है क्योंकि पहेलवान मे ताकत है, तो पिटता वही है, जो कमजोर है | हमारी फसल अगर

सामर्थ्यवान बनेगी, ताकतवर बनेगी तो उस पर कोई कीड़ और रोग नहीं आएगा | मित्रों ,आपने शेर का उदाहरण देखा कि किस तरह से वह कमजोर हिरन को खाता है | प्रकृति की सिस्टम के एक उदा. से हम बताना चाहते हैं कि किस तरह चक्र की तरह एक के बाद एक घटना घटती है |

प्रकृति के साथ प्रगती की ओर

भाइयों, हमारी ताकत नहीं है कि हम प्रकृति की इच्छा के विपरीत कुछ कर सकें, इसीलिए हमें उसकी प्रणाली के साथ चलना है, जिससे प्रकृति हमारे विरोध में कार्य ना करे | फसलों को अगर हम स्वस्थ रखेंगे, उन्हे अच्छा खाना देंगे, हमारी मिट्टी को स्वस्थ रखेंगे, तो हमारे प्रति प्रकृति का स्नेह हमारे प्रति बना रहेगा | जब हम प्रकृति को अप्रिय कार्य करेंगे तभी प्रकृति हमारे विरोध में काम करेगी, 'मल्टीप्लायर' प्रकृति से प्राप्त उत्पाद होने के कारन प्रकृति से मित्रता करके मिट्टी को उपजाऊ बनाता हैं, 'मल्टीप्लायर' हमें प्रकृति के प्रकोप से बचाता हैं, तथा प्रकृति की कृपा हम पर बनाये रखता है |

*** धन्यवाद ***